गोवा विश्वविद्यालय शणै गोंयबाब भाषा और साहित्य महाशाला हिंदी अध्ययन शाखा

नाम : तृप्ती दमाजी

कक्षा : एम. ए [भाग १]

विषय : HIN-528

विषय शीर्षक: भाषा और साहित्य :सामाजिक एंव सांस्कृतिक सर्वेक्षण

GOA UNIVERSITY
TALEIGAO PLATEAU
GOA

अनुक्रमणिका

क्र	विषय	पृ. स
1	प्रस्तावना	1-2
2	सर्वेक्षण क्या है	3-4
3	नांवशी गांव का परिचय	5-6
4	सर्वेक्षण (रपट)	7-8
5	समग्र शिक्षा अभियान	9-10
6	हिंदी भाषा का ज्ञान	11
7	सामाजिक समस्याएँ	12-13
8	व्यवसाय एवं आर्थिक स्थिति	14-17
9	यातायात सुविधा	18
10	नेटवर्क सुविधा	19
11	लोकसंस्कृति	20-23
12	स्वच्छता अभियान की जानकारी	24
13	गांव के लोगो की अपेक्षाएँ	25
14	निष्कर्ष	26

प्रस्तावना

हमारे पाठ्यक्रम के अंतर्गत सामाणिक सर्वेक्षण यह विषय रखा गया है। इस सर्वेक्षण के लिए हमने नावशी नामक गांव का चयन किया। इस सर्वेक्षण के दौरान प्राप्त किये गये अनुभव मूल्यवान है। आज हम अपने जीवन में इतने व्यस्त हो गया है कि हम दूसरों के जीवन, उनके आचार-विचार, संस्कृति आदि को जानने का समय नहीं मिलता हैं। पर हमारे इस विषय के माध्यम से हमें मौका मिला लोगो के जीवन को जानने का।

हमारा पाठ्यक्रम इतना तंग है कि हमें अपने घरवालों के लिए भी समय नहीं मिलता। हम विश्वविद्यालय से घरा आते हैं तो इतना थक जाते हैं कि पढ़ाई करने का भी मन नहीं होता है। लेकिन इस विषय ने हमें अपनी दिनचर्या से बाहर आकर लोगों से बातचीत करने का मौका दिया।

हमे अनजान लोगों के बीच जाकर उनके बारे में जानकारी हासिल करनी थी। और वह काम आसान नहीं था। मैं अपने पड़ोसियों से बात भी करने नहीं जाती और मुझे नहीं पता था कि उनसे कैसे बात करनी है। एक तरफ दिल में उत्साह था कि कुछ नया सीखने को मिलेगा तो दूसरी तरफ डर भी था। कई सवाल मेरे मन को परेशान कर रहे थे। क्या वे हमारे सवालों का जवाब देंगे? क्या उनका व्यवहार हमारे प्रति अच्छा होगा? आदि ।

मैं और मेरी दोस्त समय से थोड़ा पहले पहुँच गए थे। तो वहाँ पर चाय टपर पर मुझे एक काकू मिली। मैंने उनसे ऐसे ही एक दो प्रश्न पूछें,तो उन्होंने मुझे उन प्रश्नों का जवाब दिया तो मेरे मन को तसल्ली हुई। मैंने उनसे और थोडे बहुत प्रशन पूछे तो उन्होंने मुझे अच्छी तरह से मेरे सारे प्रश्नों का जवाब दिया। इसप्रकार मन का वह डर गायब सा हो गया। एक आत्मविश्वास मन में जागृत हुआ कि हाँ, मैं यह कर सकती हूं।

तो ऐसा करके हमने एक-एक घरों में गए जहाँ पर ।हमें हमारे प्रश्नों के उत्तर मिले। वहाँ के लोगों ने हाँ आदरपूर्वक हम से बात की अपने घरों में बुलाया हमें

कुछ फल दिए खाने को। उनका व्यवहार हमारे प्रति बहुत अच्छा था। कई जगह हम बाहरी ही खड़े होकर उनसे प्रश्न पूछने लगे।

इस प्रकार इस मर्वेक्षण के माध्यम से बहुत कुछ सीखने के लिए मिला। नये अनुभव प्राप्त किए। लौगों से किस प्रकार बात करनी है, आदि बातो का ज्ञान प्राप्त हुवा।

इस तरह हमने हमारी प्राध्यापिका श्वेता गोवेकर जी के मार्गदर्शन में इस सर्वेदाण कार्य को पूरा किया। सबसे पहले सर्वेक्षण का अर्थ बताते हुए आगे विभिन्न विषयों के अंतर्गत मैने अपने द्वारा प्राप्त की हुई जानकारी को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

सर्वेक्षण क्या है

सर्वेक्षण एक शोध पद्धति है जिसके तहत विशिष्ट विषयों के संबंध में लोगों के कुछ समूहों के विचारों और भावनाओं को जानने के लिए चुनिंदा प्रश्नों को भेजा जाता है।

सर्वेक्षण का उपयोग सार्वजनिक से लेकर निजी तक सभी क्षेत्रों में एक शोध उपकरण के रूप में किया जाता है। वे आपको बहुत से लोगों तक पहुंचने और बहुत सारी जानकारी तुरंत इकट्ठा करने में मदद कर सकते हैं।

सर्वेक्षण के परिणामों से आप अपने लक्षित दर्शकों के बारे में निष्कर्ष पर पहुंच सकते हैं जो उन कार्यों की जानकारी देते हैं जो आप करना चाहते हैं। इसलिए महत्वपूर्ण निर्णय लेने में सर्वेक्षण अपरिहार्य हैं।

सर्वेक्षण कई प्रकार के होते है जैसे कि सामाजिक सर्वेक्षण, जनसंख्या सर्वेक्षण आर्थिक सर्वेक्षण आदि

सामाजिक सर्वेक्षण

सामाजिक सर्वेदाण के अंतर्गत एक निश्चित प्रोत्र को चुना जाता है तथा उस दोडा से संबंधित सामाजिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक आदि जानकारी प्राप्त की जाती है।

सर्वेक्षण क्षेत्र का चयन करने के बाद सर्वेक्षण कार्यक्रम का संचालन करना आवश्यक है। इसके लिए हमने प्रश्नावली उपकरण को चुना। इस प्रश्नावली को इस प्रकार डिज़ाइन किया गया था कि हमारे अवलोकन का उद्देश्य पूरा हो सके। यह प्रश्न इस प्रकार है

आपका नाम क्या है।

आपकी उम्र।

घर में कितने सदस्य है।

उनकी शिक्षा।

हिंदी विषयक उनका ज्ञान।

उनकी संस्कृति

उनकी समस्याएं आदि।

नांवशी गांव का परिचय

अगर हम आज के गांव की और प्राचीन गांव की बात करे तो हम कही सारे अंतर देख सकते है। गांव का नाम लेते ही हम ऐसे गांव में पहुंच जाते है, जहां मिट्टी की सुघन, कच्चे सडको को से होकर, जहाँ सारे लोग पीने का पानी लाने के लिए नदी पर जाया करते थे आदि। और यदि मैं नांवशी गांव की बात करू तो, वह गांव प्राचीन गांव से भिन्न हैं। इस गांव में कही सारे नारियल के पेड़ है। जिसे गांव और सुन्दर दिखता है। इस गांव की मशहूर चीज है मछली का कारोबार। और इसी पर पूरे गाँव की सुंदरता टिकी हुई है। गांव की जनसंख्या लगभग ३००-४०० तक होगी।

यह बात सभी जानते होंगे कि गोवा पर राज्य पुर्तगालो का था। इस वजह से आज भी यहाँ के रहन-सहन, भाषा, खान-पान पर पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव दिखाई देता है। और यदि हम नांवशी के लोगो की भाषा पर गौर करे तो ईसाई धर्म की भाषा का जबरदस्त प्रभाव दिखाई देता है। पुर्तगालो का शासन होने के कारण उन्होने यहां के लोग का धर्मांतरण किया था। उन्हें जबरन ईसाई धर्म अपनाना पड़ा। जिके चलते वहां के लोगो को बहुत सारी मुश्किलो का सामना करना पडा। वहां के निवासियो के लिए सबसे बुरे दिन थे। कई सारे अत्याचार उन के उपर हुए। पर आज गोवा स्वतंत्र है। इन लोगों ने फिर से अपना धर्म अपना लिया है। वे लोग हर एक हिंदू त्योहार मनाते हैं। धर्मांतरण होने के कारण उनके नाम भी बदले। पर एसे कई लोग है जिन्हो ने अभी भी नाम वही रखा है। हमने जब उनसे पूछा की आपने अभी तक क्यो नहीं बदला यह नाम तो कई लोगो का यहीं कहना था कि वे इस नाम से खुश है और इससे उनको कोई दिखत नहीं है।

जब हम उस गांव में पहुचे, तो वहा के बड़े-बड़े घरो को देखकर ऐसा लग रहा था कि गांव ही नहीं है। और उस गांव की अच्छी बात यह है कि नांवशी गांव एक शांतिपूर्ण गांव है। यह गांव नांवशी नाम से ही जाना जाता है। पर इस गांव

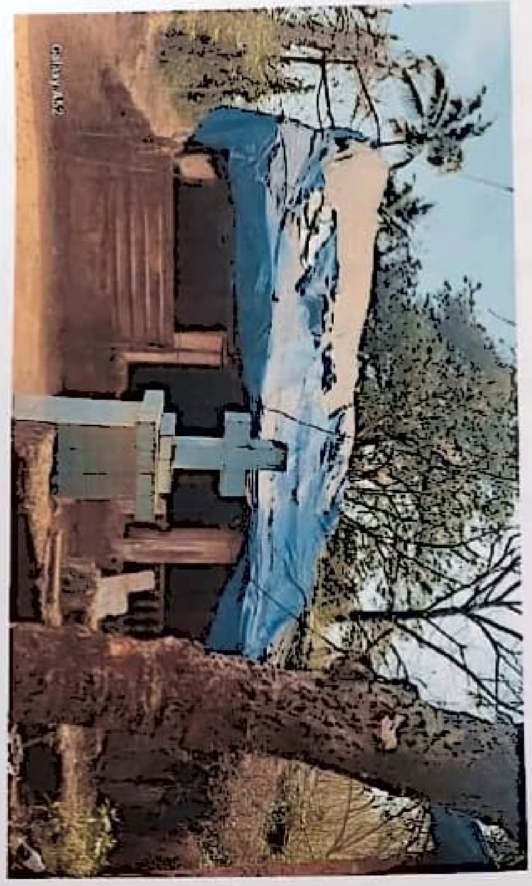

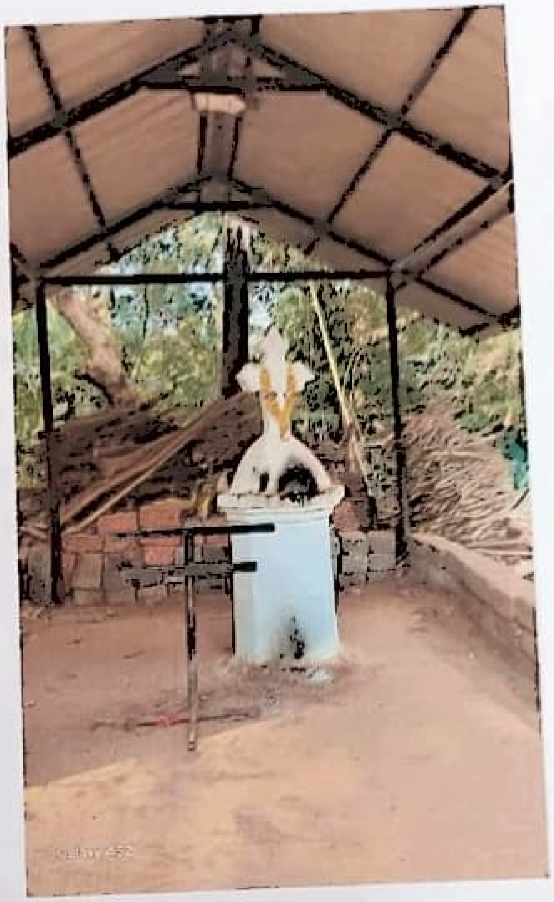

Galaxy A52

में दो 'वाडे' है। वयलो वाडो और सकयलो वाडो। और उसी के आधार पर दो 'राखडार' भी है। उस गांव में दो मंदिर है। एक मंदिर गणेशजी का जिसको बनाने का काम अभी भी जारी है और दूसरा मंदिर सातेरी देवी। इस गांव के अधिकतर लोग मछली व्यवसाय पर निर्भरित हैं। यहां पर मनाये जानेवाले त्यौहार जैसे धालो, जागर, शिग्मों जादि अपना विशिष्ट महत्व रखते हैं। उस गांव की सबसे अच्छी बात मुझे यह लगी कि जो ईसाई लोगों ने *खुरिस* बनाये थे। वे आज भी उस गांव वैसे के वैसे ही हैं। उस गांव में पूरे हिंदू लोग रहते हैं। जिसका भी मन चाहे वो उस खुरिस के सामने मोमबती जलाते हैं।

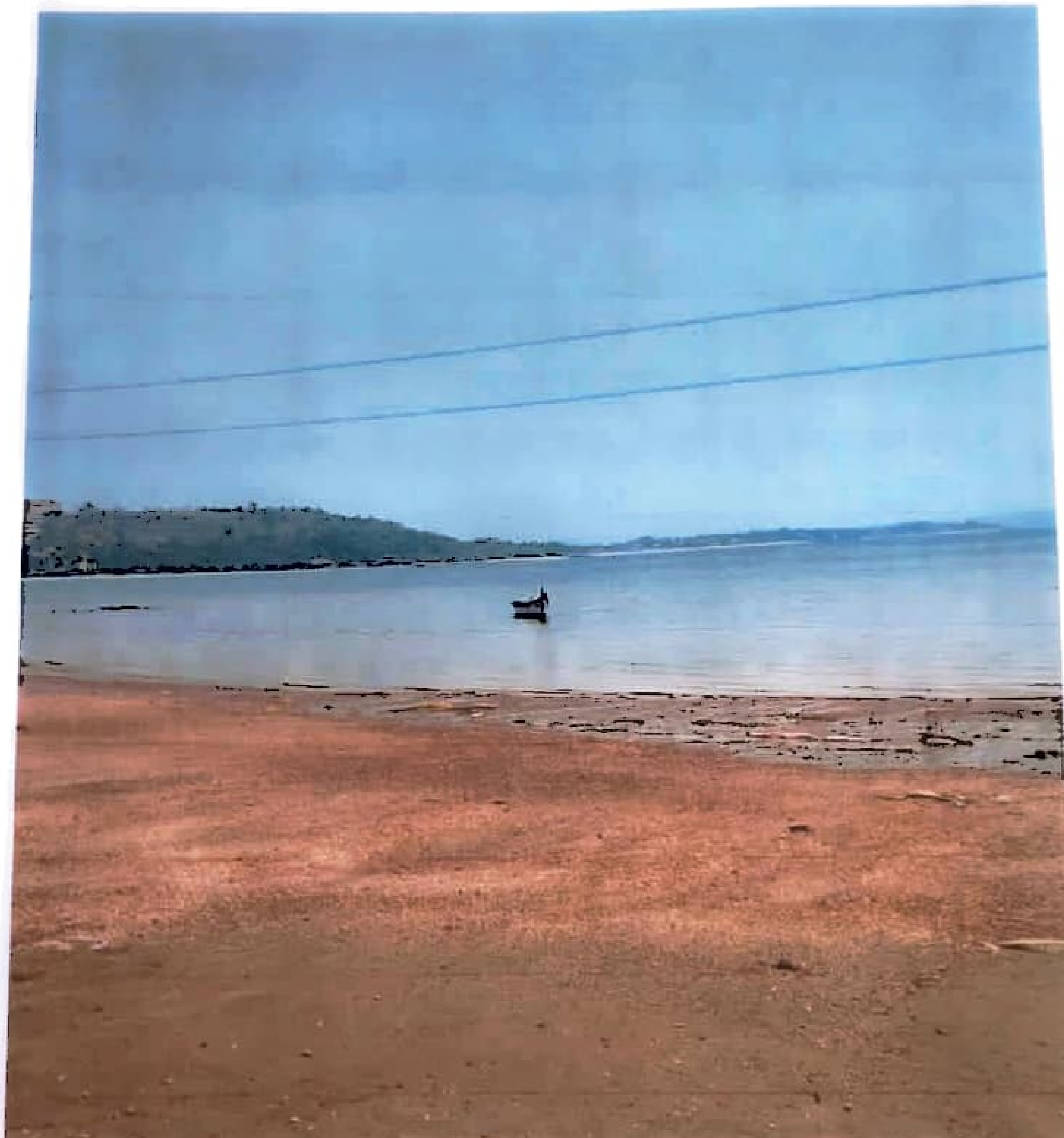

सर्वेक्षण (रपट)

इस सर्वेक्षण के दौरान हमें दो दलो में विभाजित किया गया था। हमारे दल में ५ लोग थे।हमने गांव के 10 घरों का सर्वेक्षण किया। जिन में से मैंने दो घरों का सर्वेक्षण किया था वह इस प्रकार है।

पहला घर है निर्मला फातर्पेकर जी का।

इनका घर वयला वाड्यार है। इनके घर में कुल चार सदस्य है।निर्मला जी की उम्र ५६ है। उन्होंने आठवी तक पढ़ाई की है।निर्मला जी को तीन बच्चे है दो लड़कियां और एक लड़का और तीनो की शादी हो चुकी है। अब उनके घर में निर्मला जी, उनका बेटा, उनकी पत्नी और देवर का लड़का रहता है। देवर का लड़का उनके घर में इसलिए रहता है क्योंकि जब वह नौवी कक्षा में था तब उनके पिताजी की मृत्यु हुई और 4 साल के बाद उनकी माँ चल बसी तो यही कारण है कि निर्मला जी के साथ रहता है। उनका लड़के ने दसवीं तक पढ़ाई की है और देवर का लडका चौदहवी कर कॉलेज छोड़ दी। उनका बेटा हाल ही में गोवा यूनिवर्सिटी में अनुबंध आधारित (कॉन्ट्रैक्ट) नौकरी पर काम पर लगा है। और देवर का लड़का ड्राइवर है। निर्मला जी किसी के घर में काम करने जाती है। उनकी आर्थिक स्थिति उतनी ठीक नहीं है। उनके घर में कोई सरकारी नौकरी करने वाला नहीं है और वे चाहती हैं कि उनके देवर के लड़के को सरकारी नौकरी मिले क्योंकि उसे माता-पिता नहीं है। उन्होंने मुझे गाव के बारे में भी थोड़ी बहुत जानकारी दी।उन्होने कहा कि हर एक घर में दो-दो सदस्य सरकारी नौकरी करते हैं। पर जब बात उन जैसे गरीब लोगों की आती है। तो कोई भी उनकी बात सुनने के लिए तैयार नहीं है। उन्होंने कहा कि इस गांव के आधे लोग एक दूसरे के साथ बात नहीं करते हैं। जब सातेरी देवी का कार्यक्रम रहता है। तब नीचे के हिस्से के लोग उस मंदिर में नहीं आते और हर शुक्रवार के दिन वहां पर छोटी सी पूजा रहती है उस समय भी वे लोग हीं आते हैं। मंदिर बनाते समय उन लोगों का बहुत बड़ा झगड़ा हुआ था जिसके कारण पुलिस की

दो-तीन बस आई और मंदिर का काम खत्म होते तक वहाँ पर ही रुकी थी। जागर के समय भी ऐसा ही होता है। एक-दो घर छोड के कोई नहीं आता है।

उसके बाद उन्होंने मुझे और एक समस्या बताई वह कि उनके घर के पीछे एक बहुत बड़ा कटहल का पेड़ है जिससे उनको बहुत परेशानी होती है। एक बार गिर जाने से उनके देवर के लड़के को अस्सी हजार का नुकसान हुआ था। उनके पास इतने पैसे न होने के कारण वे चाहते हैं कि सरकार उनकी मदद करें और कटहल के पेड़ को काट दिया जाए। उनके घर से कोई भी मछुआरा नहीं है पर फिर भी वह चाहती है कि यह प्रोजेक्ट कभी सफल न हो। क्योंकि अधिकांश लोग इस मछलियों पर ही अपनी जिंदगी चला रही है। और उनके परिवार का पेट इन मछलियों के सहारे चलता है।

दुसरा घर है माधवी काणकोणकर जी का।

इनके घर में चार सदस्य है। वो, उनके पति, दो लड़कीयां। माधवी काणकोणकर जी की चाय की टपरी है जहां वो चाय के साथ-साथ समोसा, वडा,आदि। उनके पति कैंटीन में काम करते है। उनकी दोनो लडकियां छोटी-मोटी नौकरी करती है और अपना देखती है। उनको मैंने सरनेम के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि उनका भी पहले सरनेम प्रेएरा था। अब उन्होंने बदलकर काणकोणकर रखा है। उन्होंने यह भी कहा कि उनके गांव में ईसाईयों के पहले तीन घर थे। पर अब नहीं है। अब उनके गांव में पूरे हिंदू ही लोग है। फिर उन्होंने होली के बारे में थोडी सी जानकारी दी। उसके बाद उन्होंने मरीना बे के बारे में कहां कि उनके सामने मरीना बे सबसे बड़ी समस्या है।वो भी इसके खिलाफ़ हैं। वो मुझसे कहने लगी कि अगर यह प्रोजेक्ट आ गया तो उन मछवारों का क्या होगा जो उस व्यवसाय के बल पर ही अपने परिवार को देखते है। वो नहीं चाहती है कि यह प्रोजेक्ट हो जाए। माधवी काणकोणकर जी की आर्थिक स्थिति उतनी अच्छी नहीं है।

समग्र शिक्षा अभियान

हम आज के गांव और प्राचीन गांव में अंतर देखिगे तो जमीन-आसमान का फर्क है। क्योंकि पुराने जमाने में महिलाओं को ज्यादा पढ़ने-लिखने की अनुमति नहीं दी जाती थी और ना ही वे लोग महिलाओं को पढ़ाने का इतना महत्त्व देते थे। महिलाओं का काम यही था कि वे घर पर रह कर खाना बनाएं यानी उनका अस्तित्व चूल्हा चौका संभालने तक ही था। पर जैसे जैसे समय बीत रहा है। वैसे वैसे लोगों की मानसिकता में भी परिवर्तन आ रहे है। जिंस गांव में हम गए थे, नावशी। वहां के लोगों से वार्तालाप करने के बाद हमें यह तो साफ साफ पता चल गया था कि वहाँ के लोग पढ़े लिखे हैं। हाँ जो लोग पहले जमाने के हैं वो उतने पड़े लिखे नहीं हैं, पर जो आज की पीढ़ी है वो पढी-लिखी हैं। हर एक घर में सभी सदस्य पढ़े लिखे हैं और अच्छी नौकरियां करते हैं। हमें कई ऐसे घर मिले हैं, जहाँ पर एक घर के दो-दो सदस्य सरकारी नौकरी करते हैं।अब बात करे नांवशे गांव के स्कूल की तो, उस गांव में एक आंगनवाड़ी हैं। जिस में सिर्फ चार बच्चे आते हैं। उनमें से एक हिंदी में बात करता हैं। मानसी काणकोणकर जो वहा पर पढ़ाती हैं। उनका कहना है कि ढाई उम्र से ही वे बच्चो को लेना शुरु करते थे। और उस समय बच्चो की संख्या भी अधिक थी। *न्यू रुलस* आने के वजह से आज के मां-बाप अपने बच्चो को नर्सरी में भेजना ज्यादा पंसद करते हैं। जिसके वजह से बच्चो की संख्या कम होती जा रही हैं। उस गांव के आंगनवाड़ी को चालीस के उपर साल हो चुक हैं। जब मानसी काणकोणकर नई-नई आई थी। तो उन से कहा गया था कि आंगनवाड़ी कई और जगह बदलनी पड़ेगी तो उन्हें उसे तुरंत ही अपने घर के बगल में शिफ्ट किया था। उनको वहाँ पर काम करते करते 14 साल बीत गयें है। सरकारी सुविधा उपलब्ध हैं। जैसे की ममता योजना जिसमे गर्भवती महिलाओ को लडकी होने पर उन्हें छ हजार दिये जाते हैं। जिसमे इनका काम है कि ये फॉर्म भरकर दे। हेल्थ चेकअप छ-छ महिनों में होता हैं। और गर्भवती महिलाओं के लिए सुखिन नाम से एक पदार्थ दिया जाता है।

उस गांव के ज्यादातर लोग अपने बच्चों को सैंटाक्रूज या मुष्टिफंड आदि स्कूलो में भेजते हैं। उनके गांव से 15 मिनट का रास्ता है। और जो पढ़े लिखे लोग नहीं है वो खुद के पैरों पर खड़े हैं। यानी वे छोटा मोटा व्यवसाय करते हैं, कोई किसी के घर में काम करने को जाते है, तो कोई अपने खेती में सब्जी उगाता है, तो कोई मछली का व्यवसाय करता है। उस गांव में हमें ऐसे ही लोग मिले हैं जो पढ़े लिखे नहीं हैं। पर उन्होंने अपने बच्चों को शिक्षा देने का पूरा प्रयत्न किया और वे खुद भी घर पर नहीं बैठे बल्कि कुछ ना कुछ काम करते रहते हैं।

हिंदी भाषा का ज्ञान

भाषा और समाज दोनों अभिन्न हैं। भाषा मनुष्य की सर्वोत्तम उपलब्धि है। भाषा के ही माध्यम से मनुष्य सामाजिक बना है। मनुष्य ने भावादान-प्रदान को व्यवस्थित करने के लिए भाषा को व्यवस्थित किया है। हिंदी भाषा है जिसे हम समझ भी सकते हैं और बोल भी सकते हैं। नांवशी गांव के लोगो की भाषा कोंकणी है। वहां के सारे लोग कोंकणी में ही वार्तालाप करते हैं। जितने भी लोगों से हमने उनके हिंदी विषयक ज्ञान के बारे में पूछा तब ज्यादा लोगों का जवाब यही था कि वे थोड़ी बहुत समझ लेते हैं,पर उतनी अच्छी तरह से हिंदी में बात नहीं कर सकते।

उस गांव के थोडे बुजुर्ग लोगों को हिंदी समझ में नहीं आती है पर ऐसे कुछ बुजुर्ग हैं उनको हिंदी समाज में और थोड़ी बहुत बोलने भी आती है। गांव के मध्यवरएक लोग, युवा तथा बच्चे हिंदी भाषा को समझ भी लेते और बोल भी लेते हैं। और उन्हें लिखना भी आता है। यहाँ के लोग हिंदी भाषा में बात तभी करते हैं जब उन्हें जरूरत होती है। जैसी कि नांवशी के अधिकतर लोग मछुआरे हैं। वे लोग मछली बेचने के लिए बाजारों तक जाते हैं और ऐसे भी कई लोग हैं जो खेतों में काम कर कर सब्जियां बेचने के लिए बाजार जाते हैं जिसके वजह से उन्हें हिंदी भाषा का प्रयोग करता पड़ता है। या ऐसे लोग जो दूसरो के घरो में काम करने जाते है जहां उन्हें हिंदी का प्रयोग अक्सर करना पडता हैं।

इस गांव के लोग अपने परिवारवालो से हिंदी में तो बात नहीं करते पर अन्य लोगो से जो कोंकणी नहीं जानते उनसे हिंदी में बोलने का प्रयास जरुर करते हैं। अगर हम देखे तो हिंदी को जानने वाले लोग यहां बहुत है। हिंदी में बात करना उन्हे पसंद है पर हिंदी अच्छी तरह से न आने के करण वे लोग हिंदी बोलने नहीं जाते।

सामाजिक समस्याएँ

जब हम उस गांव में जाने वाले थे, तब हमें इतना तो पता था कि उस गांव के लोग किस बात को लेकर परेशान है। और वह है मरीना बे परियोजना। मरीना बे आज से दस साल पहले की समस्या नहीं है बल्कि यह समस्या कई सालों से चली आ रही है। जब हमने वहाँ के लोगों से प्रश्न पूछना शुरू किया तो २-३ प्रश्न पूछने के बात, सीधा मुद्दा मरीना बे का आता है। वहाँ के लोगों ने हमें सिर्फ एक ही समस्या बताई है और वह है मरीना बे।

थोड़े सालो के लिए इस परियोजना पर कोई बातचीत नहीं हुई थी। पर हाल ही में यह मरीना बे विषय फिर से चर्चा में आ गया। इस मरीना बे के बारे में वहाँ के ज्यादातर लोगो को कुछ पता नहीं था। यानी इसके फायदे क्या हैं, इससे नुकसान क्या होगा, इससे उन्हें किस परेशानियो का सामना करना पड़ेगा आदि। वहाँ के शिक्षित व्यक्तियो ने और रामराव वाघ ने मिलकर एक बैठक आयोजित की। और वहाँ के लोगों को समझाया कि मरीना बे आने से उनको तो कोई फायदा होने से राह पर प्रोजेक्ट आने से नुकसान हद से ज्यादा होगे। ये सारी बातें वे तभी बताने में सफल रहे जब उन्होंने उनका रिपोर्ट पड़ा, यह वहाँ से जानकारी इकट्ठी की, ऑनलाइन सर्च करके देखा आदि। और यह प्रोजेक्ट कहाँ से शुरू होगा और कहाँ जाकर खत्म होगा और इसका परिणाम क्या होगा? ये सारी बातें जब उन्हें धीरे धीरे पता चल गई तब सारे गांव के लोग एक होकर इस मरीना बे का विरोध में खडे हुए।

रिपोर्ट वगैरह की सारे बातो की जानकारी नरेश काणकोणकर के माध्यम से हमें प्राप्त हुई। उस ने यह भी कहा कि मरीना बे के बारे में उन्हें कुछ भी जानकारी सरकार ने नहीं दी थी। कैसे और किस तरह से होगा। इस प्रोजेक्ट से फायदे होगे बस यहा तक ही बताया था। इस फायदे से उनका क्या नुकसान होगा इससे वहाँ के लोग अनजान थे। उसने यह भी कहा कि पंचायत ने हमेशा उनका साथ दिया। वे यह भी कहते है कि आज वो नौकरी कर रहे हैं तो उनकी बात

छोड़ दे, लेकिन जिन लोगों की रोटी-रोजी इन मछलियों पर निर्भर हैं उनका क्या होगा? इसके बारे में कोई नहीं सोच रहा है।

उसी तरह हमें और एक व्यक्ति मिले जिनका नाम है सगुण काणकोणकर। जो एक कांट्रेक्टर थे। उन्होंने भी वही बात कही कि उनकी बात छोड़ दे तो, गांव के अधिकांश लोग उन मछलियों पर निर्भर है। उनका यह भी कहना था कि दस प्रतिशत लोगों के पास यह व्यापार नहीं होगा। पर उन लोगों का क्या जो इन मछलियों पर जीते हैं। वे अपनी जिंदगी कैसे जियेंगे? जो पूरा परिवार एक आदमी पर आश्रित है उस परिवार का क्या होगा?

जब हमने उनसे पूछा कि यह मरीना बे आ जाने से क्या गांव के लोगों को किसी भी तरह की सुविधाएं उपलब्ध होंगी? तो इसका जवाब उन्होंने ही नहीं बल्कि गांव के हर एक व्यक्ति ने जवाब यही दिया कि जब ग्रैंड हयात बना था तब ऐसे ही बड़े बड़े बातें कही थी कि ये वो करेंगे, नौकरियां देंगे पर साल दो साल में उस गांव के जिन लोगों को काम के लिए लिया था। उन सब को निकाल दिया यह कारण देखकर की उन्हें वह काम करने नहीं जमता है। तो इस मरीना बे के आने से उन्हें कोई आशा नहीं थी उसने कि वह के स्थानीय लोगों को वे नौकरियां देगे।

जिन लोगों ने दिन रात मेहनत कर के ये घर बनाये है। उन लोगो को अपनी छत भी इस मरीना बे के वजह से खो देनी पड़ेगी।

व्यवसाय एवं आर्थिक स्थिति

नांवशी गांव के लोगों का मुख्य व्यावसाय समुद्र से जुडा हुवा हैं। आधे से ज्यादा लोग मछलियों का व्यवसाय करते हैं। उस गांव के लोगों का जीवन ही उन मछलियों पर हैं। उस गांव में कम ही लोग होगे जो नौकरियाँ करते हैं। यह एक ऐसा व्यवसाय है उन लोगों के लिए, जिससे उनहें अन्य काम करने की जरुरत नहीं पडती हैं।

यह व्यवसाय उन लोगों के पूर्वजो से चला आ रहा हैं। और आज भी चलाते आ रहे है। उस गांव के निवासी क्राइसिस जी के जरिए से उस व्यवसाय के बारे में हमें थोडी बहुत जानकारी प्राप्त हुई। उन्होने कहा कि जो नावें वे लोग लाते है उनकी कीमत करीब-करीब ३-४ लाख होती हैं। वे लोग सुबह के ४-५ बजे समुद्र में नाव लेकर जाते हैं। और ७-८ बजे समुद्र से लौट आते है। जब उनको हमने पूछा कि क्या इन दिनों में मछलियां मिलती है? तो उन्होने कहा कि इन दिनों में ज्यादा मछलियां नहीं मिलती हैं। जैसे कि करमट, वल्यो, बागडे आदि ही मिलती हैं। पर बारिश के दिनों में बडी मछलियां हाथ लग जाती हैं। वे कहने लगे कि पहले मछलियां बहुत ज्यादा मिलती थी। अब उतनी ज्यादा नहीं मिलती है। जब हम उन से प्रशन पूछ रहे थे तभी हमारी नजर वहां बैठे एक काका की ओर गई। जिनका नाम है जसिंतो कुएलो। और हमने उनसे पूछा कि वे क्या कर रहे हैं? तो उन्होने कहा कि यह मंछलियों को पकडने का जाल है। और वे खुद अपने हाथो से घर पर बैठकर बनाते हैं। जो जाल वे बना रहे थे, वो किसीने ऑर्डर दी हुई हैं। जितनी भी उनको मछलियां मिलजाती हैं। वे सारी मछलयां लेकर बम्बोलिम बाजर में बेचने के लिए जाते हैं। मछलियां बिक्री होने से वे लोग उन पैसो से अपना घर चलाते हैं। उन मछुवारो को उस व्यवसाय की इतनी आदत हो गई है उन्होने कभी भी अन्य काम किया ही नहीं हैं। वह व्यवसाय ही उनके लिए सब कुछ है। एक तरह से कहे तो यह व्यवसाय ही उस नांवशी गांव की पहचान है

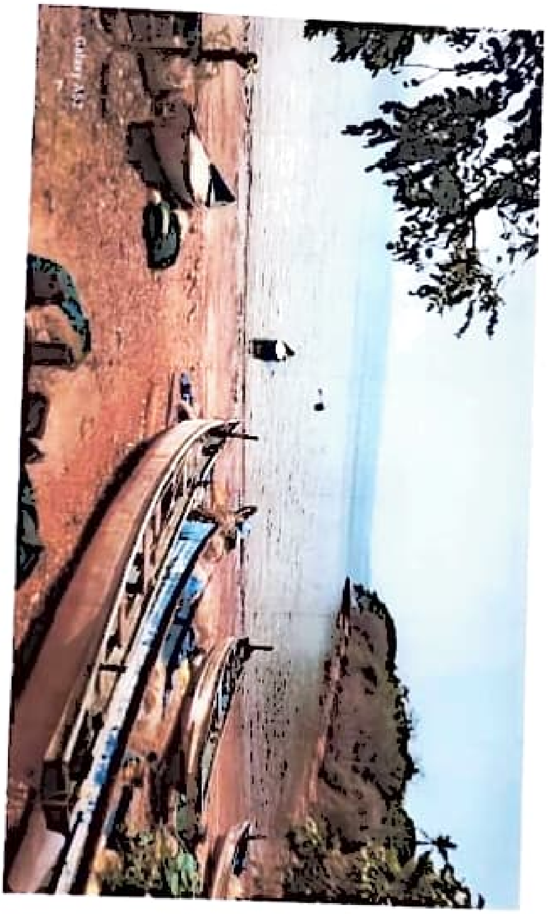

Galaxy A52

SHREE VETAL
Galaxy A52

अब उस गांव की आर्थिक स्थिति की बात करे तो अधिकांश लोग तो मछलियों पर निर्भर हैं। और वही उनका गुज़ारा हैं। इस गांव में एसे भी घर हैं, जहां एक ही घर में दो-दो सरकारी नौकरी करने वाले लोग हैं। और उस गांव में ऐसे भी लोग है जिनकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है। और वे चाहते हैं कि उनकी आर्थिक स्थिति में बदलाव आए। मुझे ऐसे दो-तीन औरते मिली है। जो पति के सहायता के बिना अपना घर चलाती हैं और अपने बच्चों को भी देखती हैं। तो हमें रंजनी मुलगांवकर मिली उन्होंने हमें कहा कि वो खेतों में सब्जियां उगाती हैं और वही बाजार में जाकर बेज आती है। और उसिके घर में जाकर काम भी करती है। उनके यह भी कहा कि उनके पति का होने या न होने से कुछ फायदा नहीं है क्योंकि उनके पति दिन रात पीते रहते हैं और गांव में घूमते हैं। उनको किसी का सहारा भी नहीं है और ना ही उनके लड़की के पास कोई अच्छी खासी नौकरी है।

उसी तरह मेरा और एक औरत से परिचय हुआ जिनका नाम है माधवी काणकोणकर जो बहुत गरीब है। उनके पति किसी कैंटीन में काम करने के लिए जाते हैं। और उनकी चाय की टपरी है जहाँ चाय के साथ-साथ पकौड़े, वड़ापाव जैसी चीजें बेचती है। उनकी जो दो लड़कियां है वो छोटी-मोटी नौकरियां अपना गुजारा करती हैं।

मैंने उस गांव की एक बात की ओर गौर किया हैं कि जितनें भी बड़े घर है उस गांव में उन घरों के पीछे जो छोटे घर है। उनकी आर्थिक स्थिति बिलकुल भी ठीक नहीं है। जिन जिन औरतों से मैं मिली, उनसे बातचीत करने पर मुझे यह शिकायत मिली है एक घर में दो दो सदस्य सरकारी नौकरियां करते हैं पर उनके घर में एक भी सरकारी नौकरी करने वाले नहीं है।

यातायात सुविधा

जैसे अन्य गांवों में यातायात का विकास हुआ वैसे नांवशी में गांव में यातायात की सुविधा नहीं है। हमने वहाँ पर देखा कि हरेक घर में मोटरसाइकिल है और वे लोग अपनी मोटर साइकिल के सहारे ही ऊपर से नीचे आते-जाते हैं। उनके गांव में पहले एक कदंबा आती थी। पर अब वह नहीं आती है। जब हमने उनसे पूछा की अब क्यो नहीं आती है। तो जवाब में उन्होने कहा कि कादंबा के ड्राइवर ने यह कंप्लेन दी है कि जब उसे फिर से टर्न लेकर जाना होता है तो रास्ता छोटा होने के कारण टर्न मारते समय उसे दिक्कत होती है। जिसके कारण उनके गांव में कदंबा का आना ही बंद हो गया। वह एक ही बस्ती जो उनके गांव में आती थी उसके अलावा कोई और बस वहाँ उपलब्ध नहीं है। हमे उस गांव में और एक ऐसे पुरुष मिले हैं जिनका नाम विनय पालकर है। जिन्होंने हमें उनके गांव में आने का रास्ता कैसे बना इस पर थोड़ी बहुत जानकारी दी।

उन्होंने हमें बताया कि उनके गांव का आधा रास्ता गांव के लोगों ने खुद बनाया और बिना सरकार की मदद से वे लोग यह रास्ता बनाने में सफल हुए हैं। रास्ता करने से पहले उन्हें कई सारी समस्या आई थी जैसे कि वहाँ पर बहुत बड़े-बड़े पत्थर जिन्हें तोड़ना उनकी बस की बात नहीं थी। फिर भी वहाँ के सामान्य लोगों ने अपने हाथों से वे बड़े-बड़े पत्थर तोड़े और रास्ता बनाया। रास्ता न होने के कारण कोई अपनी बेटियों की शादी भी इस गांव में नहीं करते थे।उस गांव के रास्ते के चड़ाई बहुत थी देखने में ही थोड़ा बहुत डर लगता है। उस गांव में कई सालों से बस न होने के कारण उन्हें अब उतना फरक नहीं पड़ता है बस ना होने के कारण

उन्हें कोई शिकायत भी नहीं है। जिनके पास मोटरसाइकिल नहीं है वे लोग चलकर जाते हैं या फिर किसी की मदद लेते हैं।

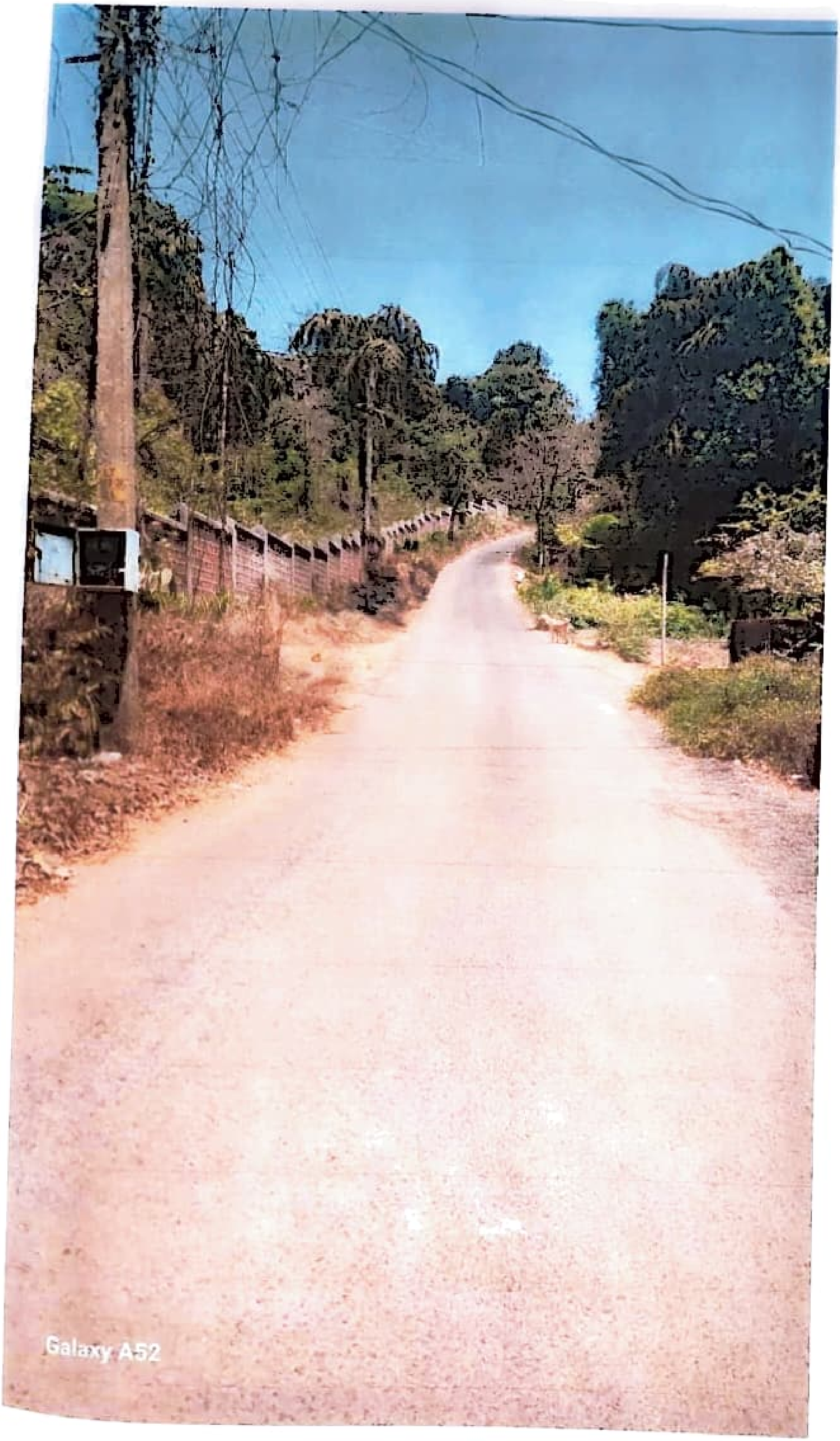
Galaxy A52

नेटवर्क सुविधा

प्राचीन समय में गांवों में ज़्यादा नेटवर्क नहीं रहता था। जिसके चलते लोगों को कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। परआज हर एक गांव में नेटवर्क की सुविधा उपलब्ध है। उसी तरह नावशी गांव में भी नेटवर्क की सुविधा है। हमने उनसे प्रश्न पूछते ही उन्हें सीधा हमें जवाब दिया कि उन्हें नेटवर्क की कोई समस्या नहीं है।

उन्हें नेटवर्क की सुविधा तो है पर ऐसे कई लोग हमें मिले हैं जिन्होंने हमें कहा कि पहले उन्हें पानी की बहुत दिक्कत होती थी। पहले उन्होंने पानी के खातिर बहुत सारी परेशानियों का सामना किया। वहाँ के लोगों को पानी लाने के लिए बाम्बोली तक जाना पड़ता था और वहाँ से वे लोग पानी लाकर अपना काम करते। पर आज हर एक घरों में पानी आता है और उन्हें पानी को लेकर उतनी दिक्कत भी नहीं होती है। उसी तरह उन्हें बिजली की भी सुविधा है।

लोकसंस्कृति

गोवा के पारंपारिक लोकत्यौहार धालो, जागर, शिगमो आदि है। नांवशी गांव की लोकसंस्कृति और परंपरा की बात करें तो इस गांव में कई तरह के उत्सव मनाए जाते हैं जो बहुत पहले से मना रहे है।

जागर

जागर यह एक लोक उत्सव है जो गोवा के कुछ गांव में मनाया जाता है और यह उत्सव रात के समय मनाया जाता है। जो रात के १०:३० शुरु हो जाता है और सुबह के ८ बजे खत्म हो जाता है। जागर की तयारी चार-पांच दिन पहले से ही शुरु की जाती है। जब यह जागोर शुरू हो जाता है तब वहाँ से किसी को

भी जाने की इजाजत नहीं होती है।

उस गांव में जागर दो बार मनाया जाता है। गांव वालों के आपसी मत-भेद के कारण इस गांव में दो जागोर मनाए जाते हैं।तो जब पहला जागर होता है तब नीचे के लोग यह जागर देखने के लिए नहीं आते और अब दूसरा जागर होता है

तब ऊपर के लोग नहीं जाते हैं। पहला जालोर मई महीने के पहले शनिवार को मनाया जाता है और दूसरा जागोर मई महीने के दूसरे शनिवार को मनाया जाता है। जागर शुरू होने से पहले एक घंटे भगवान के नाम लेने होते है। आदिवन नामक गाया जाता है। जो 'जलमी' होती है वो किसी को भीदेने नहीं मिलता है। वह सिर्फ गांव के लोगो का ही हक्क है। एक दिन पहले उनको खुरिस के पास जाकर और दो-तीन ईसाईयो को बुलाकर 'गायना' गायी जाती है। और उन्होने यह भी कहा कि ऐसा वे सदियो से करते आ रहे है। ऐसे न करने से उनका कोई भी कार्य शुरु नही होता है। तो यह सारी जानकारी हमें वासु काणकोणकर के माध्यम से मिली है।

जैसे: आदिवन बाप्पा गा गणपती देवा

ब्रहमदेव आनी विष्णू शंकरू ।।2।।

तियूय मळून मळून गा एक दत्तगुरु ।।2।।

कृपा दिगा बाप्पा आदी अनंता ।।3।।

दत्तगुरु तुका नमन नमन, दत्तगुरु ०००००००

धालो

मैंने पहली बार सुना है कि नांवशी गांव में धालो महिलाओ को खेलने नहीं मिलता है।यह धा लो रात के दस बजे शुरू हो जाता है। और पांच दिन के बाद खत्म हो जाता है। और अंतिम धालो होली के दिन रात को समाप्त हो जाता है। लडकियो को ११साल होते ही, उन्हे भी खेलने से बन किया जाता। यह धालो तुलसी के पास खेला जाता है।

जैसे: असो लिके चो रावण

मदा मो जाला वा

तो इस गीत का अर्थ ऐसा है कि रावण जो है भिक्षा मागता है। और वो गांव गांव घुमता है। सीता रावण को पहचान जाती है और उससे कहती है हमें ही कुछ नहीं है तो तुम्हे कहा से दे? और जो लक्ष्मण ने रेखा खींची थी उससे सीता बहार आ जाती है और रावण आसानी से उस का हरण करता है।

मैंने जो धाले देखे हैं उनमें से कई सारे महिलाओं पर भार आता है पर ना उसी गांव में जो धालो खेला जाता है उसमें किसी पर भी भर नहीं आता है।

शिगमो

गमो के लिए वे लोग भगवान जी की 'दिवली' लाते है। फिर वे लोग गांव का पूरा चक्कर लगाते। वह दिवली तुलसी के पास ही रहती है।उसका एक गीत रहता है जो गाते गाते 'माटवान' जाते है। फिर 'माटवान' चावो' निकालना होता है और वो भी भगवानके नाम लेकर। फिर वापस आकर भगवान का कुछ बोलते है और फिर समाप्त करते है।

सातेरी केळबाई देवी मंदिर

तो इसमें सातेरी केळबाई देवी की पूजा होती है। सभी भगवान को बाहर लाकर बिठाया जाता है उनकी भी पूजा की जाती है। फिर ठीक सात बजे महिलाओ की 'दिवजा' होती रहती है। फिर 'पालकी' झील पर ले जाती है। और जो गांव का 'जलमी' रहता है वही 'झर' के पास जाता है।

स्वच्छता अभियान की जानकारी

नांवशी गांव के स्वच्छता की बात करे तो मुझे वह गांव स्वच्छ लगा। मुझे ज्यादा कोई गंदगी दिखाई नहीं दी। मुझे तो वह गांव साफ सुथरा लगा। और जब भी उनके गांव में कोई भी त्यौहार होता है तब तो वह गांव और सुंदर दिखाई देता है।

हम देख सकते हैं की ऐसे कई गांव होते हैं जो उतने स्वच्छ नहीं होते सभी ओर गंदगी ही रहती है। पर नावशी गांव में मुझे ऐसी कोई गंदगी नहीं दिखी।

जितना स्वच्छ गांव होगा उतने सवस्थ लोग होगे। हमे हमेशा घर, गांव, या अपने आस-पास स्वच्छ रखना चाहिए। गंदगी से कई सारे रोग भी उत्पन्न होते है। एक औरत ने ऐसा भी कहा था कि विरेश बोरकर के वजह से उनका गांव और भी स्वच्छ दिखाई देता है।

उस गांव में कूड़ा कचरा लेने के लिए भी गाडी आती है। जेसे आज उनका गांव स्वच्छ है। वेसे ही हमेशा रहे।

गाँव के लोगों की अपेक्षाएँ

उन लोगों की हमसे इतनी ही अपेक्षा थी कि यह मरीना बे प्रोजेक्ट होने से रोक दिया जाय। यह प्रोजेक्ट होने से उस गांव के लोगों का अस्तित्व ही नहीं रहेगा। सरकार उनके साथ इतना बुरा सलूक न करे।

निष्कर्ष

तो इस प्रकार हमने नांवशी गांव का सर्वेक्षण पूरा किया है। इस तरह सर्वेक्षण के माध्यम से नांवशी गांव के समाज को जाना। उनकी संस्कृति से प्ररिचित हुए। उनके व्यावसाय के बारे में जाना। गोवा के पारंपारिक लोकउत्सव धालो, शिगमो और जागर को जानने का मौका मिला। इस गांव के अनेक ऐसी बातों से जानने का मौका मिला जो अनजान थी। उस गांव के आपसी सम्बन्ध को भी मैंने जाना का मौका मिला। तो इस प्रकार यह मर्वेक्षण हमें बहुत कुछ सीखा गया। इससे हमारे व्यक्तित्व में जो परिवर्तने आया है, उसे हम अनुभव कर सकते हैं।